ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 229-230

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

समावेशी परिवेश में दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन सम्बंधी समस्याओं का अध्ययन

1. डॉ0 रीना पाण्डेय
2. संदीप जैन

1. असिस्टेंट प्रोफेसर, 2. शोध अध्येता– शिक्षाशास्त्र विभाग, जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म0प्र0) भारत

Received-18.01.2023, Revised-28.01.2023, Accepted-15.02.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***प्रत्येक बच्चे के कुछ जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त होते हैं कि उन्हें शिक्षा प्राप्त करना भी इन्हीं अधिकारों में एक होता है। बच्चों में लिंग जाति धर्म और शारीरिक बनावट के आधार पर विभिन्नता देखने को मिलती है। समावेशी शिक्षा में विद्यार्थियों में विभिन्नता होने के बावजूद भी एक ही विद्यालय में छात्र शिक्षा ग्रहण करके पारस्परिक विकास करते हैं, प्रत्येक बच्चे का अधिकार है कि परिवार समाज एवं विद्यालय की सहायता से विकसित होकर समाज की उन्नति में अपना योगदान दे सके। समावेशी परिवेश में शिक्षा प्राप्त करके सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थी सहयोगात्मक रूप से समाज के विकास में अपनी भूमिका का निवर्हन कर सकते हैं।***

कुंजीभूत शब्द– समावेशी परिवेश, दिव्यांग विद्यार्थियों, समायोजन, जाति धर्म, शारीरिक बनावट, शिक्षा ग्रहण, पारस्परिक विकास।

शिक्षा द्वारा दिव्यांग छात्र समाज की मुख्यधारा से जुड़े रहते हैं तथा साधारण छात्र उन्हें उनकी विशिष्टताओं के साथ स्वीकार करते उनकी विशेषताओं से लाभ उठाते हैं, जिससे दोनों की समायोजन शक्ति का विकास होता है, जो समाज के लिए सर्वसिद्ध होती है। समावेशी शिक्षा में सभी छात्र सुरक्षा का अनुभव करके सीखते हैं तथा समाज के प्रति प्रतिबद्धता की भावना जागृत होकर कार्य करते हैं। वे साथ–साथ विद्यालय के अंदर व बाहर सभी गतिविधियों में भाग लेते हैं। वे विद्यालय में दैनिक योगदान देकर कार्य करते हैं। सभी खेलकूद तथा पाठ्यक्रम सहगागी गतिविधियों में भाग लेते हैं। समावेशी विद्यालयों में सभी छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप शैक्षिक सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। उसका क्रियान्वयन प्रशिक्षित एवं विशिष्ट अध्यापकों के सहयोग से किया जाता है। विद्यालय में सभी तरह की सुविधाओं में लचीलेपन का गुण होना अति आवश्यक है, जिससे सभी छात्रों की शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति करके सर्वांगीण विकास किया जा सके।

समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है, इसमें शारीरिक रूप से बाधित बालक और सामान्य बालक एक साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते हैं। अतः हम कह सकते है कि समावेशी शिक्षा अपंग विद्यार्थियों के पृथक्कीकरण के विरोधी व्यावहारिक समाधान है। समावेशी शिक्षा में सामान्य छात्र और मानसिक तथा शारीरिक रूप से बाधित छात्र सभी एक साथ बैठककर एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं। अतः समावेशी शिक्षा में सभी नागरिकों को समानता के अधिकार प्रदान किया जाता है। ऐसे संस्थाओं में विशिष्ट बालकों के अनुरूप प्रभावशाली वातावरण तैयार किया जाता है। सामान्य और विशिष्ट बालक बिना किसी भेदभाव के साथ एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

समावेश परिवेश से तात्पर्य– समावेशी शिक्षा तो विशिष्ट शिक्षा का पूरक है। कभी–कभी बहुत कम शारीरिक रूप से बाधित बालकों को समावेशी शिक्षा संस्थान में प्रवेश कराया जा सकता है। गम्भीर रूप से अपंग बालकों को जो विशिष्ट शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करते हैं। सम्प्रेषण व अन्य प्रतिभा ग्रहण करने के पश्चात् वे समन्वित विद्यालय में भी प्रवेश पा सकते हैं। समावेशन एक छत्र शब्द है जो सभी छात्र को उनकी सामाजिक पहचान के बावजूद, उनकी भिन्नताओं और अक्षमताओं की परवाह किये बिना, शैक्षिक प्रणाली ने प्रत्येक श्रेणी के बच्चों को शामिल करने के लिए संदर्भित करता है। यह विविधता को महत्व देता है, प्रत्येक बच्चा कक्षा में आता है और सभी को सीखने और बढ़ने के समान अवसर प्रदान करता है।

शिक्षा को मुख्यधारा का अर्थ दिव्यांग बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है या समान अवसर प्रदान करने से है जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपयुक्त सामाजिक मानवीकरण और अधिगम को बढ़ावा देते हैं।

दिव्यांग विद्यार्थियों की समायोजन सम्बंधी समस्यायें– दिव्यांग विद्यार्थियों में समायोजन को बाह्य कारक भी प्रभावित करते हैं तथा समाज का उपेक्षित व्यवहार परिवार एवं आस–पड़ोस का दिव्यांगों के प्रति दृष्टिकोण एवं मानसिक सोच समायोजन को प्रभावित करती है। शैक्षिक क्षेत्र में संसाधनों की कमी एवं विद्यालयी कारण जैसे पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता शिक्षकों की असंवेदनशीलता, समावेशी परिवेश में दिव्यांगों की समायोजन क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक प्रतीत होते हैं तथा इन कारकों को ध्यान में रखते हुये यदि इनका निराकरण किया जाता, तो दिव्यांगों की समायोजन क्षमता को संतोषजनक किया जा सकता है।

दिव्यांगों की सबसे वृहद समस्या भावनात्मक हीनता है अपनी कमियों के कारण इनमें हीनता की भावना जन्म लेती है जो इसके विकास को बाधित करती हैं। दिव्यांग जनों की सर्वाधिक समस्या उनकी स्वास्थ्य एवं रोजगार सुविधा से दूरी है जो उन्हें और अधिक सुमेद्य बनाती है। दोषपूर्ण वाणी वाले बच्चों को हीन भावना की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः ऐसे बालकों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाना चाहिए मानसिक रूप से अपंग बच्चों को समायोजन सम्बंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे परिवार में समायोजन सम्बंधी समस्या, स्कूल एवं समाज ने समायोजन सम्बंधी समस्या आदि है।

दिव्यांग बच्चों के समायोजन में समावेशी शिक्षण व्यवस्था के अंतर्गत उन्हें शिक्षित कर समाज की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु जोरदार सिफारिश की जाती है। शिक्षा ही एक मात्र उपाय है, जिसके द्वारा दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए तैयार किया जा सकता है। दिव्यांग बच्चों के लिए अधिकतर विद्यालयों में अभी तक अनुकूल वातावरण की कमी है। इसलिये समावेशी शिक्षा प्रणाली के द्वारा समस्याओं का निदान किया जा सकता है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

शिक्षकों का प्रशिक्षण, योग्यताएं और दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा के लिए प्रमुख सीमाएं हो सकती है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षकों को पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, जिससे सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों का समावेशन हो सके।

समावेशी परिवेश के पक्ष में तर्क– सर्वप्रथम दिव्यांग बच्चों हेतु समावेशित शिक्षा के लिए उचित सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना अति आवश्यक है। प्रायः देखा गया है कि दिव्यांग के प्रति नकारात्मक अभिवृत्तियां उनके विद्यालय प्रवेश में प्रमुख बाधाएं हैं, परिणामस्वरूप विद्यालय के प्रधानाचार्य इन विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रवेश देने से मना कर देते हैं उनकी धारणा होती है कि ये दिव्यांग बच्चे उनके विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेंगे सामान्य बच्चों की शिक्षा को भी प्रभावित करेगी व साथ ही अध्यापकों की जिम्मेदारी भी अनावश्यक रूप से बढ़ पायेगी। सामान्य विद्यालयों में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी के नतीजे में अक्सर देखने में आता है कि वे विकलांग एवं दृष्टिहीन विद्यार्थियों को समस्याओं से अपरिचित रहने के कारण उनकी दिव्यांगता को अधिक आंकते हैं। अतः कहा जा सकता है प्रधानाचार्य प्रत्येक विद्यालय की धुरी की भांति काम करते हैं यदि वह दिव्यांग बच्चों की क्षमताओं से परिचित हो तो बिना समस्या के इन बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के आधार पर विद्यालय में परिवर्तन लाते हुए शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराकर अपने विद्यालय को आदर्श विद्यालय के रूप में प्रस्तुत कर सकता है समावेशित विद्यालय में बच्चों में परस्पर सहयोग की भावनाओं का विकास होता रहता है, जिसे वे अपने दिव्यांग सहपाठी का सहयोग करते हुए, ऊँच–नींच भूलकर समान अवसरों का लाभ उठाते हुए उनकी क्षमताओं से परिचित होते हुये शैक्षिक विकास कर सकते हैं जिससे दिव्यांग विद्यार्थी में कोई हीन भावना विकसित नहीं होती है। और सामान्य विद्यार्थी, दिव्यांग विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं व विशेष उपकरणों से परिचित हो जाते हैं। दृष्टिहीन सहपाठी के कारण दृष्टिवान, मार्गदर्शक तकनीक ब्रेल लिपि आदि से खेल–खेल में परिचित हो जाता है। अतः प्रशासन का सहयोग अधिगम को अधिक सुचारू तथा क्रमबद्ध बना सकता है।

समावेशी परिवेश के विपक्ष में तर्क– समावेशी शिक्षा सामान्य तथा विशेष दोनों प्रकार के छात्रों हेतु महत्वपूर्ण है। निर्देशन एक प्रक्रिया है तथा उसकी सुविधा सभी को उपलब्ध हो। न कि केवल कुछ विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के लिए। सामान्य व्यक्तियों के जीवन में प्रगति एवं समस्याओं के समाधान के लिए भी निर्देशन उतना ही आवश्यक है, जितना कि विशेष समस्या वाले व्यक्ति के लिए। समावेशी विद्यालय में अध्ययनरत अपंग छात्र यदि यह जानना चाहता है कि उसे उसकी दिव्यांगता में कमी लाने वाले उपकरण शासन की योजना में निःशुल्क यहां से प्राप्त हो सकते हैं वह निर्देशक से इनकी जानकारी प्राप्त कर सकता है यदि एक कमजोर नजर वाला छात्र जिस कक्षा के ब्लेक बोर्ड पर लिखी इबारत दिखाई नहीं देती तो वह इस समस्या का हल निर्देशक के पास से प्राप्त कर सकता है।

उपसंहार– दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन में वास्तविक जागरुकता का अभाव पाया जाता है। ऐसी स्थिति में समायोजन में कभी–कभी रूकावट पायी जाती है। दिव्यांग छात्रों के लोगों में सामान्य छात्रों के लोगों की अपेक्षा संकुचित मानसिकता अधिक प्रभावी होती है दिव्यांग छात्र नियोजन के विषय में जागरुकता का अभाव, संकुचित मानसिकता, संज्ञान रूढिवादी सोच या दृष्टिकोण सामाजिक अंतःक्रियाओं के अवसरों की कमी वास्तविक रूप में परिलक्षित होती है। आज का युग पूर्णतः वैज्ञानिक युग है। विज्ञान चरमोत्कर्ष पर है प्रत्येक समस्या का समाधान सम्भव है। प्रत्येक व्यक्ति स्वावलम्बी है। अतः दिव्यांगजनों के सामने यह समस्या उत्पन्न हो गयी है। दिव्यांग को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने हेतु यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम उनकी समस्याओं का अध्यन करके उसका समाधान करना आवश्यक है। इन सभी वातावरण में दिव्यांग बालकों के समायोजन के लिए सकारात्मक सोच एवं हीनता की भावना पनपने से रोकना समायोजित व्यक्तित्व उत्थान का प्रशिक्षण देकर मुख्य धारा में लाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिक्षक प्रशिक्षण लेखमाला, ऑल इण्डिया कन्फेडरेशन ऑफ दि ब्लाइंड रोहिणी, दिल्ली 110085, प्रथम संस्करण 2004
2. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार, प्रो. एच.पी. गुप्ता, डॉ. अल्का गुप्ता, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, संस्करण 2017.
3. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, डॉ. मालती सारस्वत, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, नवीनतम संस्करण, 2022.
4. https/hi.m.wikpedia.org.weki
5. https/testbook.com of uestion ans.

*****